सामान्य हिन्दी + साहित्यिक हिन्दी

चौपाई

लक्षण :

यह एक सममात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं। अन्त में दो गुरु होते हैं ।

उदाहरण : मंगल भवन अमंगल हारी ।

द्रवहु सु दसरथ अजिर बिहारी॥

अथवा

जब - जब होहिं धरम कै हानी।

बाढ़हि असुर अधम अभिमानी ॥

तब-तब प्रभु धरि विविध सरीरा ।

हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥

दोहा

लक्षण:

यह अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं, इसके पहले व तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं तथा दूसरे व चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में गुरु और लघु होना चाहिए।

उदाहरण:

सतगुरु हम सूँ रीझि कर, कह्या एक प्रसंग।

बरस्या बादल प्रेम का, भीजि गया सब अंग ॥

सोरठा

लक्षण:

यह दोहे का उल्टा होता है। यह भी एक अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसमे चार चरण होते हैं, इसके पहले और तीसरे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं तथा दूसरे और चारों चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे चरण के अन्त में लघु गुरु होते हैं।

उदाहरण:

- बंदहु गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि ।
  महा मोह तम पुंज, जासु बचन रविकर निकर ॥

अथवा

सोरठा के अन्य उदाहरण:

1. जो सुमिरत सिधि होय, गननायक करिबर बदन।
   करहु अनुग्रह सोय, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥

2. कुंद इंदु सम देह , उमा रमन करुनायतन ।
   जाहि दीन पर नेह , करहु कृपा मर्दन मयन ॥

3. रहिमन मोहि न सुहाय , अमिय पियावत मान बिन ।
जो विष देत बुलाय , प्रेम सहित. मरिबो भलो ।

कुण्डलिया

लक्षण:

यह एक विषम मात्रिक छन्द है। इसमें छह चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ होती हैं। आदि में एक दोहा और अन्त में एक रोला जोड़कर कुण्डलिया छन्द बनता है। जिस शब्द से इसका प्रारम्भ होता है उसी से अन्त होता है। दोहे का जो चौथा चरण होता है, वही रोला का प्रथम चरण बनता है।

उदाहरण:

रहिए लटपट काटि दिन, बरु धामे माँ सोय।
छाँह न बाकी बैठिये, जो तरु पतरो होय।।
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा दे हैं।
जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जर से जै हैं।
कह "गिरिधर कविराय' छाँह मोटे की गहिए।
पाती सब झरि जायँ, तऊ छाया में रहिए।